ब्रह्मकुमारीज द्वारा आयोजित 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' कार्यक्रम में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का सम्बोधन

माननीय प्रधान मंत्री जी,

राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र जी

राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी

गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल जी

माननीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी जी

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन जी

राजयोगी डॉ. B. K. मृत्युंजय जी

एवं उपस्थित देवियों और सज्जनों

---

1. मानव कल्याण के लिए समर्पित वैश्विक संस्था ब्रह्मकुमारीज द्वारा राजस्थान की गौरवशाली धरती से 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के शुभारंभ से जुड़कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। हमारा सौभाग्य है कि इस अभियान का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री जी के कर कमलों से हो रहा है।

2. आज का दिन हमारे लिए विशेष स्मरणीय दिन है। आज ही के दिन 53 वर्ष पूर्व संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्म बाबा का स्वर्गारोहण हुआ था। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

3. ब्रह्मकुमारीज एक विश्व स्तरीय संस्था है जो पिछले 8 दशकों से पूरे संसार में मानव सेवा का पुनीत कार्य कर रही है। व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण से खुशहाल विश्व निर्माण के उद्देश्य के साथ कार्यरत ब्रह्मकुमारीज आज दुनिया की एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक संस्था है।

4. सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना की प्रतीक ब्रह्मकुमारीज ने समस्त मानवता को राजयोग का मार्ग दिखाया है जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी आंतरिक ऊर्जा को सक्रिय करते हुए स्वयं को परमात्मा से जोड़ देता है।

5. साथियों, हमारा स्वतंत्रता संग्राम विश्व में सबसे अद्भुत था। हमने अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग को अपनाया और इस विशाल देश को एक सूत्र में बांधते हुए व्यापक जन भागीदारी के माध्यम से आजादी प्राप्त की। यह हमारे स्वतंत्रता सेनानियों एवं मनीषियों की त्याग, तपस्या और बलिदान से ही संभव हुआ था। वास्तव में, अमृत महोत्सव का आयोजन स्वराज से सुराज की लोकतान्त्रिक यात्रा का ही उत्सव है।

6. 'आजादी का अमृत महोत्सव' माननीय प्रधान मंत्री जी की व्यापक संकल्पना है जिसमें पिछले 75 वर्षों की विकास यात्रा के साथ-साथ आने वाले 25 वर्षों के लिए देश के सर्वांगीण विकास की कार्ययोजना भी समाहित है ताकि जब हमारी आजादी के 100 वर्ष पूरे हों, तब हमारा देश वैश्विक पटल पर एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में सामने आए।

7. आजादी का यह अमृत महोत्सव एक ऐसा पर्व है जिसमें स्वाधीनता संग्राम की भावना भी है तथा एक स्वर्णिम भविष्य का स्वप्न भी है। इसमें सनातन भारत के गौरव की झलक भी है और आधुनिक भारत के निर्माण का संकल्प भी है।

8. ब्रह्माकुमारीज जैसी मानवी संस्थाओं का इस अभियान में शामिल होना इस ओर संकेत करता है कि देश की समाज सेवी संस्थाएं इस राष्ट्रीय संकल्प की सिद्धि में सक्रिय और सकारात्मक भूमिका निभा रही हैं।

9. मानव सभ्यता के आरंभ से ही भारत अध्यात्म, शांति और मानवीय मूल्यों का केंद्र रहा है। अध्यात्म हमारी जीवन शैली है, हमारी सांस्कृतिक चेतना का एक अंग है। हमारे शास्त्रों ने हमें *'वसुधैव कुटुम्बकम'* का व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण दिया है।

10. इसी विचारधारा का अनुसरण करते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने विश्व को 'वन अर्थ – वन हेल्थ' का मंत्र दिया तथा वैश्विक महामारी का सामना करने के लिए एक साझी कार्य नीति के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई।

11. आजादी का अमृत महोत्सव वास्तव में एक ऐसा विजन है, एक ऐसा विचार है जो देश की अंतर्निहित शक्तियों को राष्ट्र निर्माण के लिए काम में लाती है। यह सबको जोड़ने का मंत्र है, एक समावेशी विचारधारा है जिसका अंतिम लक्ष्य देश के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण है।

12. आपने अपने इस अभियान में स्वास्थ्य, आत्मनिर्भरता, किसानों, महिलाओं, शांति, पर्यटन तथा पर्यावरण जैसे ज्वलंत विषयों को रेखांकित किया है।

13. यह दिखाता है कि स्वर्णिम भारत का निर्माण तभी हो सकता है जब देश का हर एक वर्ग, हर एक क्षेत्र में आगे बढ़ने का सामूहिक प्रयास करे।

14. राष्ट्र निर्माण के इस महायज्ञ में प्रत्येक संस्था, प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्रीय दायित्वों और कर्तव्यों का निर्वहन करना है।

15. हमारा हर कार्य राष्ट्र के लिए समर्पित हो, हमारे सभी प्रयास राष्ट्र हित की कसौटी पर कसे जाएँ और हम एक नए संकल्प और नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान करें, तभी आजादी का यह पर्व भारत को नई ऊंचाईयों पर ले जाने का प्रेरणा पर्व बन सकेगा।

जय हिन्द।

———